ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-158-159, YEAR JUNE 2016

भारतीय पुनरुत्थानकाल पुनर्जागरणकालीन चित्रकला

❑ डॉ.गुलाबधर

भारतीयकाल में आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता रही है। बारहवीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय कला के क्षेत्र में विशेष जागरुगता व कला के चिन्ह नहीं दिखायी दिया। ई.वी. हैवेल सन् 1884 ई. में सर्वप्रथम मद्रास कला विद्यालय के प्राचार्य बने। 1896 ई. में उन्होंने संसार का ध्यान भारतीय कला की ओर अकर्षित किया। भारतीय कला और संस्कृति के जागरण की ओर जब भारतीय जनता का ध्यान आकर्षित हो रहा था। उसी समय कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में हैवेल। आये हैवेल के सहयोग से बंगाल में एक नवीन कला आन्दोलन आरम्भ हुआ। हैवेल न बंगाली विद्यार्थियों को केवल विदेशी–रीतियों पर काम सिखाने की त्रुटियों को समझा और उन्होंने भारतीय जीवन और आदर्श पूर्ण मुगल तथा राजपूत कला की ओर ध्यान दिया। हैवेल ने यूरोपियन चित्रों की नकल बनवाने की प्रथा को उचित न समझा। किन्तु इस प्रकार अंग्रेज प्रिंसिपल के द्वारा भारतीय कला पर जोर देने की बात को बंगाल की जनता ने रहस्यपूर्ण माना और बंगाल की जनता ने उनके इस आन्दोलन के प्रति एक क्षोभ और प्रतिक्रिया प्रदर्शित की। अनेक बंगाल की पत्रिकाओं में इस आशय के लेख प्रकाशित हुये। अंग्रेज अपनी कला भारतीयों को नहीं सिखाना चाहते इस प्रकार भारत की जनता में इस नवीन शिक्षण पद्धति के प्रति अत्यंत रोष फैला।

इसी समय में हैनेल ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों से युरोपियन चित्रों के संग्रह के स्थान पर उत्कृष्ट भारतीय चित्रों के संग्रह को तैयार कराने की अनुमति प्रदान की। संयोगवश हैवेल की भेंट प्रसिद्ध टैगोर परिवार के चित्रकार स्व. अवनीन्द्रनाथ टैगोर से हुई और उन्होंने टैगोर की सहयता से भारतीय चित्रकला को कक्षाएं कलकत्ता आर्ट स्कूल में प्रारम्भ की और टैगोरे को इन कक्षाओं का अध्यक्ष बना दिया गया। यहा पर ही अवनीन्द्रनाथ ने हैवेल महोदय की देखरेख में भारतीय चित्रशैली में स्वयं भी अनेक प्रयोग किये और 'बुद्ध जन्म', 'बुद्ध तथा सुजाता' अन्य भारतीय चित्रों का निर्माण किया।

भारतीय कला परम्परा के अध्ययन पर बलदेकर उचित दिशा में हैवेल और अवनीन्द्रनाथ ने उचित दिशा में कदम उठाया किन्तु भारतीय जीवन दर्शन को प्रभावी रूप में साकार करने का श्रेय आचार्य रवीन्द्रनाथ टैगोर को है और उनको हम भारतीय आधुनिक कलाकार मान सकते हैं। टैगोर '1381–1941' ने विद्यार्थी के रूप में कोई कला शिक्षा नहीं ली। आसाधारण, काव्यमय वृत्ति व सूक्ष्म ग्राहक संवेदन क्षमता उनकी कला व साधन थे। कलापूर्ण रूप से सहज ज्ञान व अन्तर्मन की क्रियाओं पर निर्भर है। लयकला को आत्मा है एवं उसकी सहज सिद्ध अनुभति कला निर्मित को प्राथमिक आवश्यकता है।

भारतीय कला जब अपने अस्तित्व को छोड़ देने के कगार पर थी। तब हैवेल ने सन् 1884 ई. में मद्रास कला विद्यालय के प्राचार्य पद पर रहना संबल प्रदान किया और संसार का ध्यान, भारतीय कला और संस्कृति की ओर आकर्षित किया। सन् 1896 ई. में वे चेन्नई कला विद्यालय से कलकत्ता आर्ट स्कूल में प्रिसिंपल बने और उन्हीं के सहयोग से एक नवीन कला आन्दोलन का सूत्रपात हुआ और भारतीय जीवन और आदर्श भारतीय कला आत्मा के अधिक निकट है इससे स्थूल जगत की अपेक्षा शाश्वत सत्यतता का प्रदर्शन होता है, जबकि पाश्चात्य कला इससे विपरीत भौतिकता के निकट है। 'पर्सो ब्राउन' और 'डॉ. आनन्द कुमार स्वामी' ने भी भारतीय कला के आदर्श गुणों के प्रचार–प्रसार में पूर्ण सहयोग दिया।

कला समीक्षक डॉ.मुल्कराज का मत है कि

❑ सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, जगद्गुरू रामभद्राचार्य वि.वि., चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

हैवेल ने ब्रिटिश कला पद्धति को हटाकर जो भारतीय पारम्परिक कथानकों एवं शैली के आधार पर कला शिक्षण आरम्भ करवाये वे भारतीयों को कला माध्यम से प्रेरित करने में सफल भी हुए। सन् 1854 ई. में कोलकाता कला विद्यालय स0 1350 में मद्रास चेन्नई कला विद्यालय सन् 1857 ई. में बुर्म्ब सन् 1857 में लाहौर में कला विद्यालयों की शुरुआत हुई। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के सहयोग में भारतीय चित्रकला शैली से अनेक प्रयोग हुये। हैवेल से भारतीय कला के यश में इण्डियन स्कल्पचर एण्ड पेंटिंग इण्डियन आर्किटेक्चर और आइडियल्स ऑफ इण्डियन आर्ट नामक पुस्तकों को प्रकाशित किया और भारतीय कला के कलात्मक गुणों के विरुद्ध प्रारित पाश्चात्य विचारों को भ्रामक बताया।

'डब्ल्यू जी.आर्यर' महोदय ने इसके विपरीत इण्डिया एण्ड मार्टन आर्ट मे ई.पी.हैवेल के उच्च विचारों को गलत माना। हैवेल ने भारतीय कलाकारों को पाश्चात्य कला के अनुकरण के बजाय, अपने अतीत को देखा और चित्र बनाओ संदेश दिया। सन् 1907 ई. में सर जॉन बुडरॉफ की सहायता से इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियंटल आर्ट की स्थापना की सन् 1919 में ओ सी गंगोली के संपादन में कला पत्रिका रूपम का प्रकाशन किया।

1. बंगाल स्कूल के कलाकारों की कृतियों में विदेशी कला का प्रभाव के रूप में जापानी वॉश पद्धति के अतिरिक्त पाश्चात्य शैली का यथार्थ रेखांकंन और चीनी आलेखन का निश्चित रूप में सम्मिश्रण मिलता है।

2. चित्रकारों ने भाषा की प्राचीन गौरवमयी, गाथाओं, धार्मिक कथाओं ऐतिहासिक प्रसंगों, साहित्यिक संसर्गों तथा जनजीवन की झांकियों से अपने विषयों का चयन।

3. रेखांकन के महत्व को पुनः प्रतिष्ठित किया गया भारतीय कलाकारों का यह मानना था कि चित्रकृतियों में गति लाने प्रकृति का रूपांकन तथा चित्रों में लय इत्यादि के पूर्ण विकास के लिये स्केचिंग (रेखांकन करने की आदत) अपनाना आवश्यक है और इसी के फलस्वरूप शिक्षक, विद्याथी एवं स्वतंत्र कलाकार खुले वातावरण में जाकर प्रकृति, पशु–पक्षी, स्त्री–पुरुष, जलचर–थलचर इत्यादि सभी के गतिमानस्केच करने लगे इससे पूर्व इस प्रकार की प्रथा भारत में प्रचलित नहीं थी।

4. वॉस पद्धति को बंगाल के अधिकांश चित्रकारों ने अपनाया। चित्र में सीमा रेखांकन, रंग भरकर, कागज को पानी में डुबोकर रंगों को फिक्स किया जाता था। कुछ कलाकारों जिनमें प्रमुख रूप से आचार्य नन्दलाल बोस, क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार ने टेम्परा पद्धति को अपनाया। कला के क्षेत्र में यूरोपियन शैली वादों तथा चित्रांकन रंग पद्धतियों का भारत में जो अंधानुकरण किया जा रहा था।

पुनर्जागरण काल भी कला में उसका परित्याग किया गया और चित्रकला के क्षेत्रों में भारतीय परम्परा, संस्कृत, धर्म एवं इतिहास आदि का प्रवेश हुआ।

अपनी उक्त प्रमुख विशेषताओं के कारण इस कला आन्दोलन ने 'बंगाल कला में या स्कूल पुनर्जागरण, चित्रकला या टैगोर शैली/पूरे विश्व में ख्याति अर्पित की और भारतीय कला को विदेशी पकड़ से मुक्त कराने में सफलता भी प्राप्त की। भारतीय संस्कृति के गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, भागवत, भारतीय कला का इतिहास, नई दिल्ली, पृ.36
2. अग्रवाह, वासुदेव सरज, भारतीय चित्रकला वाराणसी, पृ.सं.160
3. राव , आधुनिक चित्रकला का इतिहास, शाख....., पृ.सं.110
4. शाश्वालकर, रवि आधुनिक चित्रकला का इतिहास, पृ.220
5. वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, , पृ.सं. 13–16
6. प्रताप, रीता भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ.सं.115–16
7. राम, कृष्णदास , भारत में चित्रकला, पृ.39

*****